239
8.36
H
Micro film

२०/१
891.431
L975

1225
1041

❀ बन्देमातरम् ❀

राष्ट्रीय ग्रन्थमाला का

प्रथम खण्ड

स्वराज्य संग्राम का

बिगुल।

यूरुप के तुम मकीं हो यूरुप मकां तुम्हारा।
हम हिन्द के हैं जाये हिन्दोस्तां हमारा॥
हुई है म्याद सरखत की खतम अब तुम्हारी।
देने में उज्र क्या है वापिस मकां हमारा॥

संग्रहकर्त्ता तथा प्रकाशक—

मास्टर के० एल० गुप्त

आगरा।

प्रथमवार १०००] सन् १९३० ई० [मूल्य ‐) प्रति

IMPERIAL
RECEIVED.
25 AUG. 1930
DEPARTMENT
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No. 836
Date 22.12.71
GOVT. OF INDIA

समर्पण

तुच्छ भेंट

श्री० पूज्य श्रद्धास्पद भारत माता के सच्चे सपूत तथा सैनिक सम्पादक पण्डित श्रीकृष्णदत्त जी पालीवाल के कठोर करों में सादर समर्पित है ।

विनीत—

मास्टर के० ऐल० गुप्त

प्रार्थना

न चाहूं मान दुनियां में न चाहूं स्वर्ग का जाना।
यही वर दो मुझे भगवन् रहूं भारत पै दीवाना॥
करूं मैं देश की सेवा पड़ें चाहे करोड़ों दुःख।
अगर मर कर जनम होवे तो भारत में ही हो आना॥
लगा रहे प्रेम हिन्दी से पढ़ूं हिन्दी लिखूं हिन्दी।
चलन हिन्दी चलूँ हिन्दी पहिनना ओढ़ना खाना॥
भवन में रोशनी मेरे जले हिन्दी चिराग़ों की।
स्वदेशी ही बजे बाजा बजाना राग का गाना॥
लगे सब देश के ही अर्थ मेरा तुच्छ विद्या धन।
करूँ मैं प्राण तक अर्पण यही प्रण सत्य है ठाना॥
संभल कर पहिन ले भारत बदन पर भक्ति का चोला।
चढ़ा ले प्रेम का रंगत दुई का त्याग कर बाना॥
नहीं कुछ गैर मुमकिन है जो दिल से समझो बिस्मिल तुम।
उठालो देश हाथों पर समझ कर अपना बेगाना॥

बन्देमातरम्

वाह क्या ही ओजमय है शब्द बन्देमातरम् ।
बोल दो सब भारतीयो ! मन्त्र बन्देमातरम् ॥
मन में बन्देमातरम् हो तन में बन्देमातरम् ।
नाड़ियों के रक्त में बहता हो बन्देमातरम् ॥
ख़ंजरे क़ातिल भले ही क़त्ल कर देगा मुझे ।
चीख भी निकलेगी तो निकलेगा बन्देमातरम् ॥
ख़ून मक़तल में बहेगा यूँ ही क्या हरगिज़ नहीं ।
भूमि पर लिखता चलेगा मन्त्र बन्देमातरम् ॥
गर मुकम्फिल जेल में हों और बंधे जंजीर में ।
खनखना कर गा उठेंगे गीत बन्देमातरम् ॥
सर ज़मीं इंगलैण्ड की हिल जायगी दो रोज़ में ।
गर कभी तासीर दिखलायेगा बन्देमातरम् ।
बैनीमाधव तप यही सिजदा यही मसजिद यही ॥
गिरजा यही मन्दिर यही मज़हब है बन्देमातरम् ॥

झण्डा

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा झण्डा ऊंचा रहे हमारा ।
है चरखे का मन्त्र सम्हारा जिसमें चक्र सुदर्शन प्यारा ॥
हरे देश के संकट सारा है यह सच्चा भाव हमारा ॥झण्डा०॥
सदा शक्ति बरसाने वाला प्रेम सुधा सरसाने वाला ॥

वीरों को हर्षाने वाला मातृ-भूमि का तन मन प्यारा ॥ झंडा०॥
स्वतंत्रता के भीषण रण में लख कर जोश बढ़े क्षण २ में।
कांपै शत्रु देख कर मन में मिट जावे भय संकट सारा ॥झंडा०॥
इस झण्डे के नीचे निर्भय लें स्वराज्य यह अविचल निश्चय।
बोलो भारतमाता की जय स्वतन्त्रता हो ध्येय हमारा ॥झंडा०॥
आओ प्यारे वीरो आओ देश धर्म पर बलि-बलि जाओ।
एकबार सब मिल कर गाओ प्यारा भारत देश हमारा ॥झंडा०॥
इसकी शान न जाने पाये चाहे जान भले ही जाये।
विश्व विजय करके दिखलाये तब होवे प्रण पूर्ण हमारा ॥
विजयी विश्व तिरङ्गा प्यारा झंडा ऊंचा रहे हमारा ॥

आजाद रहे

मेरी जां न रहे मेरा सर न रहे सामां न रहे न यह साज रहे।
फ़क़त हिन्द मेरा आज़ाद रहे माता के सर पर ताज रहे ॥
पेशानी में सोहे जिसके तिलक और गोद में गांधी विराज रहे।
न यह दाग बदन में सफेद रहे न यह कोढ़ रहे न यह खाज रहे ॥
सिक्ख हिन्दू मुसलमां एक रहें भाई २ सा रस्मो रिवाज़ रहे।
मेरे वेद पुरान कुरान रहें मेरी पूजा और नमाज रहे ॥
मेरी टूटी मढ़ैया में राज रहे कोई गैर न दस्तन्दाज रहे।
मेरे वीना के तार मिले हों सभी एक भीनी मधुर आवाज रहे ॥
ये किसान मेरे खुश हाल रहें पूरी हो फसल सुख साज रहे।
मेरे बच्चे वतन पर निसार रहें मेरी मां बहिनों में लाज रहे ॥

मेरी गाय रहें मेरे बैल रहें घर घर में भरा नित नाज रहे।
घी दूध की नदियां बहती रहें हरसू आनन्द स्वराज्य रहे॥
माधौ की चाह प्रभू की कसम मेरे बाद बफ़ात यह याद रहे।
खद्दर का कफ़न हो मुझ पै पड़ा वन्देमातरम् अलफ़ाज़ रहे॥

भारत से ब्रिटिश सरकार की (होली)

भारत में सब विधि होली फिर से होने वाली है॥ टेक॥
अमृतसर होली की अब तक बुझी न तुम से आग।
हुई सुर्ख रंग से जो होली मिटे नहीं वो दाग॥
मिटी जलियान हरियाली है॥ भारत०॥ १॥
पिछली होली के रंग से है अभी तलक नभ लाल।
फिर होली होने को आई रखना खूब खयाल॥
न हटती बहुत हटाली है॥ भारत०॥ २॥
होली के धूआं से होगा परिपूरण आकाश।
जिससे तुमको मुश्किल होगा लेना अपनी स्वास॥
ये पहिले से कह डाली है॥ भारत०॥ ३॥
अब की होली का रंग खिलकर कैसी देय बहार।
हम तो रंग रंग डूबे हुए हैं तुम भी रहो होशियार॥
न ये पिचकारी खाली है॥ भारत०॥ ४॥

जगादो

उठो भारत वीरो जगत को जगा दो।
और गांधी का सन्देश घर घर सुना दो॥

स्वदेशीय खद्दर सभी लोग धारें ।
विदेशीय वस्त्रों की होली जला दो ॥
चलाओ सब चरखा मेरी मातु बहिनो ।
औ चक्र सुदर्शन से लन्दन हिला दो ॥
भारत को स्वाधीन अब करके छोड़ो ।
गुलामी का नामो निशां तक मिटा दो ॥
जो हो जेलखाना तो कृष्ण मन्दिर समझो ।
प्यारे वतन पर सर को चढ़ा दो ॥
सदा न रहेगी जवानी जवानो ।
अत्याचारियों को मज़ा अब चखा दो ॥
जीना सदा नहीं मरना है एक दिन ।
मर करके दुनियां को जीना सिखा दो ॥
जो चाहो अमरता जगत में वियोगी ।
तो निर्भय हो प्राणों की आहुति चढ़ा दो ॥

मोहनदास करमचन्द गांधी

मोहनदास के वीर सैनिक बनेंगे ।
उन्हीं के हुक्म पर सदा हम चलेंगे ॥
उठाये थे झण्डा तिरंगा फिरेंगे ।
इसी के लिये हम जियेंगे मरेंगे ॥
सुनायेंगे नेताओं की आवाज़ को हम ।
बनायेंगे फिर स्वर्ग संसार को हम ॥

मिटायेंगे हम दासता अब जगत से
करें बन्धु सम प्रेम सारे जगत से ॥
वही प्रेम-गंगा यहां फिर बहेगी ।
जो संसार की पाप माला हरेगी ॥
कहेगा जगत फिर तो एक स्वर में सारा ।
यही वृद्ध भारत गुरु है हमारा ॥

हिन्दुस्तान की

क्या हुआ बिगड़ी है गर तकदीर हिन्दुस्तान की ।
नक्श दिल सब के है फिर तस्वीर हिन्दुस्तान की ॥
लूट कर हालांकि सब कुछ ले गए मालो मता ।
फिर भी है सब से बड़ी जागीर हिन्दुस्तान की ॥
"ग्रीक सिल्यूकश" के जिसने दांत खट्टे कर दिये ।
मशहूर आलम है वही तलवार हिन्दुस्तान की ॥
शाह अकबर की चली, कुछ भी न जिसके सामने ।
बतला रही है देखलो तहरीर हिन्दुस्तान की ॥
अब वही दिन आ रहे हैं सबको बतला देंगे फिर ।
सब से बढ़कर है 'प्रिये' तौकीर हिन्दुस्तान की ॥

महात्मा गांधी

मादरे हिन्द की है आंख का तारा गांधी ।
चर्ख पर कौम के पुर नूर सितारा गांधी ॥

जेलखाने में भी जाकर उठाना कुड़ा ।
मुल्क के वास्ते करते हैं गवारा गांधी ॥
हिन्दकी बहतरी के वास्ते दर २ फिर कर ।
सख्तियां झेलीं बहुत कष्ट सहारा गांधी ॥
बच्चे २ का सर क़दमों में झुका जाता है ।
जान हाज़िर है अगर करदे इशारा गांधी ॥
मालिके मुल्क मोतीलाल यही कहते हैं ।
हम हैं गांधी के तरफ़दार हमारा गांधी ॥
चन्द इस ज़िन्दगी में काम न पूरा हो गर ।
हिन्द के वास्ते आयेगा दोबारा गांधी ॥

सरकार की जान के लाले हैं

ऐ मादरे हिन्द न हो गमगीन दिन अच्छे आने वाले हैं ।
आज़ादी का पैग़ाम तुझे हम जल्द सुनाने वाले हैं ॥
मा तुझको जिन जल्लादों ने दी है तकलीफ़ ज़ईफ़ी में ।
मायूस न हो मग़रूरों को अब मज़ा चखाने वाले हैं ॥
कमज़ोर हैं हम और बेबस हैं गो कुन्ज कफ़स में बैठे हैं ।
बेकस हैं लाख मगर माता ! हम आफ़त के परकाले हैं ॥
मेरी रूह को करना क़ैदो क़त्ल इमकान से तेरे बाहर हैं ।
आज़ाद है अपना दिल शैदा गो लाख ज़बां पर ताले हैं ॥
मुसलिम और हिन्दू मिल करके एक हुआ बयां कर सकते हैं ।
ऐ चर्खे कुहन होशियार हो तू पुरजोश हमारे नाले हैं ॥

गांधी ने तरकेतअल्लुक का कुछ ऐसा मंत्र चलाया है।
लरजा है जिससे अरजोसमां सरकार की जान के लाले हैं॥
हां, आए मुसाफिर बड़े-बड़े मग़रूर बिलाखिर चले गये।
अब चन्द रोज़ में परदेशी लन्दन को जाने वाले हैं॥

गजल चर्खा

स्वराज्य तो हम को दिलायेगा चर्खा।
विदेशी हकूमत मिटायेगा चर्खा॥
यह घूं घूं की धुर्पद सुनायेगा चर्खा।
मेरे हौसले अब बढ़ायेगा चर्खा॥
अगर हिन्द अपना चलायेगा चर्खा।
तो दुश्मन का चर्खा बनायेगा चर्खा॥
अगर कोई दिल से भुलायेगा चर्खा।
तो नीचा उसी को दिखायेगा चर्खा॥
विदेशी को यहां से भगायेगा चर्खा।
स्वदेशी का डंका बजायेगा चर्खा॥
सदा मेल के गीत गायेगा चर्खा।
उदू के जिगर को जलायेगा चर्खा॥
नहूसत से पीछा छुड़ायेगा चर्खा।
हमें चैन से अब बिठायेगा चर्खा॥
हमें खीर हलवा खिलायेगा चर्खा।
हमें दूध शीरीं पिलायेगा चर्खा॥

विदेशी तिजारत को खायेगा चर्खा ।
स्वदेशी की जड़ को जमायेगा चर्खा ॥
जो "गुप्त" भी अपना घुमाएगा चर्खा ।
तो दुश्मन को चक्कर में लायेगा चर्खा ॥

गुलामी से हमको छुड़ायेगा खद्दर ।

ज़ालिम को जड़ से मिटायेगा खद्दर ।
अदाएं जब अपनी दिखायेगा खद्दर ॥
हसीनों के दिल को लुभायेगा खद्दर ।
जीवन का लट्ठा नहीं नैनसुख है,
मलमल के पुरज़े सड़ायेगा खद्दर ।
फ़लालैन रोयेगी सर को पकड़ कर,
वकीलों के घर में जब आयेगा खद्दर ।
योरुप के रोवेंगे सारे जुलाहे,
घर घर में स्यापा करायेगा खद्दर ।
चिकन डोरिया और छब्बी की मलमल,
मलमल के सबको रुलायेगा खद्दर ।
भारत की इज़्ज़त है इसमें ही भानू,
भारत के तन पर हो भारत का खद्दर ।
हमें यह भरोसा हमें यह यकीं है,
कि आज़ादी हमको दिलायेगा खद्दर ।
उरूज एक दिन ऐसा पायेगा खद्दर,
योरुप को नीचा दिखायेगा खद्दर ।

निगाहों में ऐसा समायेगा खद्दर,
हरसू नज़र हमको आयेगा खद्दर।
हमें भाग ऐसे लगायेगा खद्दर,
ज़मीं से फलक पर बिठायेगा खद्दर।
हमें दोनों हाथों से जो लूटते थे,
अब उनके छक्के छुड़ायेगा खद्दर।
जलाए हैं जिसतौर कपड़े विदेशी,
यूं ही दिल उदू का जलायेगा खद्दर।
हिक़ारत से देखो न हरगिज़ इसे तुम,
नहीं तो अभी होश उड़ायेगा खद्दर।
न लहरीक खद्दर कम होगी यारो,
दिन ब दिन बढ़ता यह जायेगा खद्दर।
जो खद्दर पहनने से डरते हैं उनको,
बला बनकर उनको न खायेगा खद्दर।
नहीं लेंगे तंजेब हम मुफ्त भी अब,
खरीदेंगे जिस भाव आयेगा खद्दर।
हिन्दू-मुसलमां सभी समझे बैठे हैं,
गुलामी से हमको छुड़ायेगा खद्दर।
जो पहनेगा खद्दर खलक उसके दिल में,
वतन की मुहब्बत बढ़ायेगा खद्दर।

नौजवानो !

नौजवानो हो खड़े अब काम करने के लिये।
आ गया पैग़ाम लाहौर से लड़ने के लिये॥

देश के मैदान में कर्मण्यता दिखलाय दो।
तुम नहीं पैदा हुये खटिया पै मरने के लिये॥
ज़ालिमों के जुल्म अबतक झेलते ही तुम रहे।
आप अब तैयार हो रिपु को जकड़ने के लिये॥
आसतीनें मार बन जो अपने पहलू में रहे।
अब हमारे लग गये बाज़ू कतरने के लिये॥
कौनसा दिन आपके आयेगा वीरो जोश का।
हर घड़ी तैयार है दुश्मन अकड़ने के लिये॥
है विनय यह आपसे असहयोग अस्त्र संभाल लो।
खौफ़ से जिसके लगे अग़ियार डरने के लिये॥

हिन्द को आज़ाद करादूं

ईश्वर गर कभी मुझे ज़ेवर का शौक़ हो।
हाथों में हथकड़ी हो गले में भी तौक़ हो॥
लगज़िश न खाऊं जिस्म पै आफ़त हज़ार हो।
ख़िदमत में क़ौम की मेरा ये सिर निसार हो॥
इज़्ज़त की ख़्वाहिश दिल में न ज़िनहार हो मुझे।
चढ़ जाऊं वतन के लिये गर दार हो मुझे॥
धुन में वतन की हरघड़ी करता सफ़र रहूं।
जाने के लिये जेल में सीना सिपर रहूं॥
हाकिम की बयां लिखने से जब क़लम बन्द हो।
इज़हार हो मेरा यही आज़ाद हिन्द हो॥
ताक़त दे ख़ुदा हिन्द को आज़ाद करादूं॥

या दुश्मनों के जेल को आबाद करा दूं॥
दुश्मन की गोलियों का हो सीने पै निशाना।
गाता हो "इन्द्र" तब भी वतन का ही तराना॥

भरदें

हो चुकीं शताब्दियां पराधीनता का पाश—
छिन्न-भिन्न करके क्लेश या कुराज हर दें।
होवें न कदापि विचलित शुभ ध्येय से जो—
आवें जो विपत्तियां तो भगा दूर धर दें॥
एकता का पाठ पढ़ा सत्याग्रह द्वारा शीघ्र—
देश को स्वतन्त्र हम वीर बन्धु कर दें।
शांति से या क्रांति से हो मारग अहिंसा से ही,
'हों स्वतन्त्र', 'हों स्वतन्त्र', भव्य भाव भरदें॥

'जीवन बलिदान करेंगे'

यह राष्ट्र ध्वजा धन मेरा, जीवन बलिदान करेंगे।
झंडा है प्राण हमारा, प्राणों से बढ़ कर प्यारा।
तन मन धन इस पै वारा, जीवन कुरबान करेंगे॥१॥
शूली पर उछल चढ़ेंगे, बन्धन से नहीं डरेंगे।
सब कुछ आफत सहलेंगे, पर झण्डा नहीं तजेंगे॥२॥
आओ झण्डा फहरावें, शुचि राष्ट्र भाव दर्शावें।
सत्याग्रह समर दिखावें, पर हिंसा नहीं करेंगे॥३॥

उच्च हिमालय की चोटी पर जाकर इसे उड़ायेंगे।
विश्व-विजयती राष्ट्र पताका, का गौरव फहरावेंगे ॥३॥
सब से ऊंची रहे न इसको, नीचा कभी झुकायेंगे।
समरांगण में लाल लाड़िले, लाखों बलि २ जायेंगे ॥४॥
गूंजे स्वर संसार-सिन्धु में, स्वतंत्रता का नमो नमो ।
राष्ट्र गगन की दिव्य ज्योति, राष्ट्रीय पताका नमो नमो ॥६॥

हुकूमत को मिटा देंगे

तबदील गवर्नमेंट की रफ्तार न होगी।
गर कौम असहयोग पर तैयार न होगी ॥
बन जायेंगे हर शहर में जालियान वाले बाग।
इस मुल्क से गर दूर यह सरकार न होगी ॥
दुश्मन को असहयोग से हम ज़ेर करेंगे।
इन हाथों में बन्दूक या तलवार न होगी ॥
ये जेलखाने टूट कर अब और बनेंगे।
इनमें तमाम कौम गिरफ्तार न होगी ॥
वह कौन अभागे वतन होगा भला जिस पर।
हंस हंस के फ़िदा जेल की दीवार न होगी ॥
सौदाई हैं हम हमको दो लोहे की बेड़ियां।
सोने के ज़ेवरों में यह झनकार न होगी ॥
जब तक कि इसे खून से सींचेंगे नहीं हम।
खेती वतन की दोस्तो गुलज़ार न होगी ॥

हम ऐसी हकूमत को मिटा देंगे मुज़्तरिब।
ग़म में जो हमारे कभी ग़मख़्वार न होगी॥

स्वराज्य प्रतिज्ञा

यही है अब हमने मन में ठानी,
स्वराज्य लेंगे स्वराज्य लेंगे।
उठे हैं अब सारे हिन्दवासी,
स्वराज्य लेंगे स्वराज्य लेंगे॥
न दिल में ख़ौफ़ो ख़तर ज़रा हो,
जेल में जाकर भी दिल हरा हो।
गवर्नमेंट का न साथ देंगे॥ स्वराज्य०॥
जलियानवाला व रायबरेली,
की गोलियों की बनेंगे थैली।
हम खाके गोली मशीनगन की॥ स्वराज्य०॥
अनेक ढंग से चाहे सतावें,
वो काले पानी का भय दिखावें!
मगर न मानेंगे हिन्दवासी॥ स्वराज्य०॥
स्वदेशी चीज़ों को अब प्रचारो,
विदेशी चीज़ों को झट निकारो।
चला के चर्खा पहिन के खादी॥ स्वराज्य०॥

मुद्रक-चन्द्रभानु शर्मा, लक्ष्मी प्रिंटिंग प्रेस, कचहरीघाट, आगरा।